

पाया है नरतन तो - प्रभु राम को तुम भज लो
फिर तो पढ़ता ओगे - हरि नाम को तुम भज लो

लख चौरासी भटके - तब आये नरतन में
तेरी कंचन सी काया, फसता है क्यों धन में
कुद् साथ नहीं जाये - प्रभु राम को तुम भज लो

फिर तो पढ़ता ओगे -

पाया है नरतन -

जब तक तुम द्रोटे थे, सबको ही प्यारे थे
धन खूब कमाया तो - तब आँखों के तारे थे
यहाँ कोई किसी का नहीं - प्रभु राम को तुम भज लो

फिर तो पढ़ता ओगे -

पाया है नरतन -

अभिमान में आकर के - हरि चरणों को भूला
चिंता के झूले में - जीवन भर तू झूला
दोड़ो जग है झूठा - प्रभु राम को तुम भज लो

फिर तो पढ़ता ओगे -

पाया है नरतन -

दिन रात के रोने से- तेरा काम नहीं होगा
 हरि-चरणों में रोले- तेरा नाम अमर होगा
 सब बंधन दूटेंगे- प्रभु राम को तुम भज लो
 फिर तो पदताओगे-----
 पाया है नरतन-----

रोंसा न हो जब मुख से- हरि नाम हीन निकले
 माया के बंधन में- रो-रो के दम निकले
 कहते हैं "श्री बाबा श्री" सुन लो
 प्रभु राम को तुम भज लो
 फिर तो पदताओगे-----
 पाया है नरतन-----